स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख उपन्यासों में महानगरीय वर्ग चेतना

डॉ. हमीरभाई पी. मकवाणा - श्री. जे.एम. पटेल पी.जी. स्टडीज एन्ड रीसर्च इन ह्युमिनिटीज, आणंद, गुजरात.

सारांश - मानव जीवन की समग्र चेतना को उजागर करने के लिए उपन्यास एक सशक्त साहित्यिक विधा हैं । उसमें जीवन के विविध पक्षों कों सहजता सें निरुपित किया जाता हैं । वास्तव में कथा साहित्य के माध्यम से ही किसी युग-समाज की ध्वनि को निकटता से स्पन्दीत की जा सकती हैं ।स्वतंत्रता प्राप्ति ने हमारे मन में सदियों से सुप्त चिर आकांक्षाओं को एक ही झटके से जगा दिया ।लोगों में अपने अपराजेय पौरुष के प्रति अदम्य विश्वास और चेतना जागृत हुई । इस चेतना का कारण था -सुखी और सम्पन्न भारत के निर्माण का नारा, जो वर्ग-हीन, शोषणमुक्त समाजवादी समाज-व्यवस्था जिसमें न वर्ग-वैषम्य होगा, न वर्ग असमानता, न जाति न ऊ१ ४च-नीच, जिस समाज में हर व्यक्ति को न्याय, समानता, विकास करने का समान अधिकार अवसर शिक्षा,काम और सुरक्षा पाने का समान अवसर होगा, जो समाज के आधार स्तम्भ हैं । हमारे समाज में दो वर्ग तो था ही। एक सम्पन्न और सुविधा भोगी और दूसरा श्रमिक और मजदूर वर्ग ।

भारत में राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद आर्थिक परतंत्रता का विस्तार हुआ । औधोगिक विकास के चलते अर्थ ही जीवन मूल्यों का सर्वाधिक सशक्त मूल्य बना । नगरों एवं महानगरों में तेजी से हुई वृद्वि के कारण समाज में आर्थिक विषमता बढी । सामान्य लोग आर्थिक अभावों के कारण पिसता और कराहता रहा । इस नई पू१ ४जीवादी व्यवसथा ने भोगवादी दर्शन को जन्म दिया फलस्वरुप नव्य धीनक वर्ग शोषण और भोग का दर्शन लेकर नगरों एवं महानगरों पर छा गया उसने समाज में अनेक विकृतियों को जन्म दिया , धन और भोग ने भ्रष्टाचार और यौवनाचार का जो नंगा स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ,जिस से एक ओर वर्ग अस्तित्व मे आया मध्यवर्ग जो अधिक जागृत बृध्द्विवादी घटक होने से, अधिक अंहमवादी स्वाभिमानी और महत्वाकांक्षी बना , बढती महंगाई, जीवन को जकडती यांत्रिकता ने उसे भी बिखेर दिया ।

इस नई पू१ ४जीवादी व्यवस्था ने समाज में विषमता का विष धीरे-धीरे ऐसा फैलाया कि समाज के सभी वर्गो को अपने गिरफत में ले लिया । इन विषम स्थित का प्रभाव हमारे कथाकारों पर भी पडा क्योंकि कोई भी रचनाकार अपने वर्तमान पसिवेश से कटकर न जी सका है, न जी सकेगा । यहा१ ४ पर महानगरीय जीवन पर लिखे गये उपन्तासों में कथाकारों ने विकसित विषम आर्थिक मानसिकता का चित्रण किया हैं । अभाव एवं वैभव की यह स्थिति महानगरों में अधिक लक्षणीय होती हैं । यांत्रिकता ने जीवन को धोर एकाकीपन दिया । इस से प्राकृतिक मानवीय संवेदना आहत हुई । गरीबीऔर बेकारी से जूझती जिन्दगियों शहरों के फूटपाथों पर बिखरी पडी हैं ।इसप्रकार हमारे स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख उपन्यासो में महानगरीय वर्ग चेतना का चित्रण किया है , वह चित्रण आम जनमास का भोगा हुआ यर्थाथ है । असमान औधोगिकीकरण के कारण महानगरों में आर्थिक विषमता के कारण वर्गभेद की विषमता सामने आयी यह विषमता हमारे समाज के लिए घातक साबीत हो सकती हैं।

स्वतंत्रता से पूर्वे हमारे देश की मूल समस्या थी ,परकीय सत्ता से संघर्ष और स्वतंत्रता प्राप्ति की । समाज सुधारकों ने सामाजिक कुरीतियाँ अंधविश्वासों आदि को दूर करने के लिए प्रयास किया, वहाँ दूसरी स्थिति थी ,स्वतंत्र आँदोलन की जागृति । यह काल नूतन आत्म-विश्वास एवं भविष्य की आशाओं आकांक्षाओं का काल रहा था । तत् कालीन उपन्यासकारों का मूल उदेश्य था, अपनी रचना के माध्यम से जनमानस का मनोरंजन करते हुए आदर्शजीवन का उपदेश देना । इसी धुन में तत्कालीन उपन्यासकारों ने ज्यादात्तर आदर्शवादी उपदेशात्मक उपन्यासों की रचना की । विश्वयुद्व के बाद की स्थिति का प्रभाव अंग्रेज शासन नीति पर भी पडा । इस परिवर्तित परिस्थितियों का प्रभाव हमारे यहाँ उपन्या साहित्य की कथा पर भी पडा परिणाम स्वरुप यर्थाथ चित्रण के साथ साथ सुधारवादी प्रवृति की ओर भी वैचारिक भावना उभरने लगी ।प्रेमचंद, इलाचन्द जोशी से अज्ञेय और यशपाल तक हिन्दी उपन्यासों में जीवन का वास्तविक यथार्थता का चित्र अंकित होने लगा । स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर ,शैलेशमटियानी ,मधुकरसिंह ,भीमसेन त्यागी, नेन्द्रकोहली, यशपाल, कमलेश्वर, गिरधर गोपाल, उषाप्रियंवदा, विधालकार जगदम्बा प्रसाद दीक्षित, मोहन राकेश आदि जैसे उपन्यासकारों ने वास्तविक स्थिति को साहित्य में साकार करने का प्रयास किया हैं ।

आजादी के बाद औधोगिक ,सांस्कृतिक और राजनैतिक तथा आर्थिक स्थितियों में काफी परिर्वतन हुआ ।खास करके हमारे औधोगिकीकरण पर अधिक, इससे एक नवीन धनिक वर्ग अस्तित्व में आया । जो बेहद समझौता परस्त अवसरवादी तथा महत्वाकांक्षी हैं ।जिन्हों ने काले धन की लूटका बेहुदा फूहड प्रदर्शन किया । फल स्वरुप भ्रष्ट्रचार को प्रोत्साहन मिला, महानगरों में अनेक संस्कृतियाँ ,भाषाएँ तथा जीवन एक साथ पाये जाते है ।स्वाभाविक है कि उनका प्रभाव एक दूसरे पर पडता है । जिस से मानवीय दृष्टिकोण व्यापक तथा संकीर्ण क्षेत्रीय मान्यताएँ शिथिल हुई ।जातिगत मान्यताएँ बदली, परंतु वर्गीय चेतना प्रबल हुई , महानगरीय जीवन यांत्रिकता के कारण व्यक्ति स्वकेन्द्रित होने लगा ,सामाजिक सम्बन्धों का ह्रास धीरे-धीरे शुरु हुआ ,जिनका प्रभाव हमारे भारतीय परिवार तथा सामाजिक संश्लेषण पर भी पडा । महानगरीय संत्रास भरी जिंदगी में मनुष्य घुटन और एकाकीपन का अनुभव करने लगा, व्यक्ति इस महानगरीय भीड को चीर कर आगे बढना चाहता है । साथ में भाग रही है भीड और इस भीड में वह अपने आपको अकेला और अपरिचित सा पाता है ।

समाज में सामान्यतः दो वर्ग प्रधान रुप में है, एक सम्पन्न और सुविधाभोगी वर्ग और दूसरा श्रमिक मजदूर ।जहाँ आर्थिक अभाव अशिक्षा के अंधकार में डूबा रोग-ग्रस्त जीवन सांसें लेती है । उसी प्रकार पूँजीवादी समाज व्यवस्था में भी दो वर्ग है । एक जिसका उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व है। और दूसरा वह जो श्रम करता है । पहले वर्ग का लक्ष्य है, शोषण और सुविधा पर स्वामित्व प्राप्त करना । तथा दूसरा वर्ग शोषित जो उत्पादन के साधनों के रुप में प्रयुक्त होते है । दूसरा वर्ग अपने श्रम का उपयोग वैयक्तिक लाभ एवं आर्थिक सम्पन्नता के लिए नहीं कर पाता । फल स्वरुप आर्थिक असमानता की खाई धीरे-धीरे बढने लगी । कुछ शिक्षा के प्रसार प्रचार एवं व्यवसाय के आधार से एक वर्ग ओर उभर कर सामने आया जिसे हम मध्यवर्ग कहते हैं ।यह वह वर्ग है ,जिसका न तो उत्पादन के साधनों पर पूर्ण नियंत्रण है और नहीं इतनी आर्थिक विपन्नता हैं । वह सिर्फ शिक्षित ,वेतनभोगी के रुप में उभरा । आज हमारे समाज में आर्थिक आधार पर तीन वर्ग अस्तित्व में है ,एक धनिकवर्ग ,दूसरा मध्यवर्ग, तीसरा सामान्यवर्ग । महानगरीय संत्रास जीवन की अभिव्यक्ति देनेवाले स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में इन तीनो वर्गों का निरुपण विस्तृत रुप से हुआ है ।

स्वतंत्रता के बाद भारत में असंतुलित औधोगिक विकास की अविवेकपूर्ण नीति ने ,असमानता ,भुखमरी ,बेकारी जैसे अनेक अभिशाप समाज को भेंट चढाए । मुनाफाखोरी कालाबाजारी तस्करी और कालेधन द्वारा यह वर्ग समाज की छाती पर सवार हो गये और राजनीतिको भी अपनी जेब में कर लिया । फल स्वरुप प्रश्न यह हुआ कि महानगरों में सामाजिक अनाचार फैलने लगा । राजेन्द्र यादव रचित 'उखडे हुए लोग' उपन्यास का देशबन्धु चरित्र ऐसा ही है । वह पूँजिपति नेता है , स्वयं की पत्नी को त्यागकर मायादेवी और उनकी बेटी पदमा के साथ 'स्वदेश महल' में रहता है । अपनी कामुक भावनाओं की पूर्ति के लिए मायादेवी को उन्होंने रखैल बनाया ,उसके पतिको शराब में विष देता है और खुद शराब के नशे में उसकी पुत्री पदमा पर टूट पडता हैं । देशबन्धु भी सफेदी के चमकार के पीछे कालिख का प्रतीक है । 'स्वदेश महल' नारियों का नारीत्व लूटने का केन्द्र है । देश के इन सफेदपोश धनिकों की रातें रंगीन बनाने का धाम हैं । 'अमृत और विष' में अमीरवाद खानदानों की वासना के फूहड प्रदर्शन को व्यक्त करता है । उपन्यास का पात्र लालकुवँर बहादुर शराब के नशे में भान भूलकर अपने किरायेदार की माँ पर भूखे भेडिये की भाँति टूट पडते हैं ।-'लाखों की सम्पति से खेलनेवाला वैभव-शाली लोग ,पढे-लिखे सभा –चतुर - उफ कितने गंदे । शराब के नशें में दोनों एक दूसरे की कलई भी खोलते हैं -- ऐसा कि सुननेवाले भी लज्जा का अनुभव करने लगे ।१

भ्रष्टाचारी एवं कालेबाजारी करनेवाले लाला रुपचंद जैसे लोग एक तीर से कई शिकार करने में निपूर्ण होते हैं । मंदिर, धर्मशाला बनावाने के नाम पर अपनी बारादरी में एकतो वर्चस्व पैदा करना ,पानी की तरह पैसा बहाकर सांप्रदायिक दंगा करवाने से भी पिछे हट नहीं करते ।-'आत्माराम की पूँजी का आधार पाप है--उनकी छाया में पलने वाला रईसवर्ग भारतीय उच्चस्थ नौकरशाही का प्रतीक हैं ।इनका आन्तरिक भ्रष्टजीवन, अर्थ –प्राप्ति अधिकार, लालसा, सम्मान की आकांक्षा और वासनापूर्ति के पीछे लगे हुए इनका आपसी वैमनस्य, प्रतियोगिता और एक दूसरे को उखाडने के दाँव-पेंच निस्सारता एवं जीवन में खोखलेपन के बोध की ओर अरविन्द शंकर ने संकेत किया हैं ।२ इस वर्ग ने अपने कालेधन का नंगा प्रदर्शन किया परिणाम स्वरुप निचले सामाजिक स्तरों में आत्म –लालसा की भ्रष्टाचारी भंयकर आग धधका दी हैं । जिसके कारण उनकी जागरुकता कुंठित हुई हैं । नव्य धनिकवर्ग की भोगलिप्सा की झलक 'बीमार शहर' में भी निरुपित हैं । जो मैडम गोरावाला का प्रेमी एक धनीव्यापरी है ।

खुदका परिवार होने के बावजूद अपने भोग विलास के लिए गोरावाला को गोवा से बम्बई लाता हैं । उसके नाम पर मकान खरीदता है । गोरावाला की तीन लडकियाँ हैं । बम्बई में ही रहते है ,उसकी सम्पन्नता का परिचय दिया है-'वह कम से कम लखपति अवश्य हैं । मोटरकारें हैं ।एक मोटरकार उसने गोरावाला की लडकी के लिए रख छोडा हैं ।उसका अपना परिवार तो है किन्तु ब्याहता रोती है, और आहें भरती है ,और वह गोरावाला की लडकी के इशारों पर बन्दर की तरह नाचता हैं ।'३ यह वर्ग बिलकुल भोगवादी और स्वार्थी हैं । वह धन के बल पर अनैतिक व्यापार में रत हैं -'ये शाकाहारी पूँजीपति रावण -कुभकर्ण के वंशधरों को कोई क्या कहे ? रंडियाँ जिसे कहते हैं -मगर येतो बेहया होते हैं ,बेईमान होते हैं --पैसा-पैसा-पैसा केवल पैसा इनका ईमान है ।केवल पैसा इनका धर्म है । केवल पैसा इनका ईशवर हैं ।'४ इनका लक्ष्य मात्रपूँजी है । उसका उपयोग भोग और विलास में करना इनके लिए गौरव और ज्ञान का विषय समझाजाता है ।

'मनबोध बाबू में' चिन्ताहरणजी के व्यक्तित्व के माध्यम से सम्पन्न एवं निर्धनवर्ग की असमानता की अभिव्यक्ति हुई । चिन्ताहरणजी के मकान के पास कुर्मीचक्र में झोपडियाँ थी जिन में सभी मजदूर, रिक्शाचालक और फेरीवाले रहते हैं । मंहगाइ से जूझते ये लोग अपना मकान बनाने का स्वप्न भी भूलचूके थे । चिन्ताहरणजी के मकान के पास ही देवचन्द्र और लाला हरवंस के भी वैसे ही मकान थे । उन्हें झोपडपट्टियाँ अपनी शान-शौकत में कोढ की तरह नजर आती है, और ये सारी चीजें उनके बर्दास्त के बाहर की थीं । वे पुलिस और नगरपालिका से मिलकर बुलडोजर चला देते हैं ।-'ये लोग उचित अनुचित सभी कार्य करलेते हैं । और काला बाजार के बल पर धन का विस्तार करते हुए वैभवशाली बने रहते हैं । इसलिए वे गरीबों के लिए कसाई की कोटी में आजाते हैं ।'५ दुविधा तो यह होती है कि पुलिस कचहरी यहाँ तक कि प्रशासन की सारी व्यवस्था भी उनके साथ होती हैं । सामाजिक वैषम्य का कारण आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था की दूषित प्रणाली हैं । भीमसेन त्यागी कृत 'नंगा शहर' में भी महानगरीय जीवन की सभ्यता को चित्रित किया हैं । शहर के बीचों-बीच गोलपार्क और स्काई-स्क्रेपर की लम्बी कतार दिखाई देती हैं । यह सेन्ट्रल मार्केट है –'रोजमर्रा के काम की चीजों के अलावा खूबसूरती, ईमानदारनि सचाई यानी हर चीज जो बिकाऊ है इस मार्केट में मिल जाती हैं ।यहाँ एक लम्बे अरसे से इन तमाम चीजों का व्यापार हो रहा हैं ।'६यह आधा शहर तो फूटपाट पर है, और बाकी आधा पार्क सडकों पर वह सब कुछ हो रहा है जो सभ्य समाज बन्द कमरों मे करते हैं । 'राकी' जैसे स्काई -स्क्रेपर में रहने वाले लोगों का जीवन वैभव की फूहडता की झलक रोम के शहंशाह की तरह है ।-'जो उम्दा भोजन में इन्सान का गोस्त सबसे उम्दा माना जाता हैं । इनके जीवन में नंगा सौन्दर्य अजीबोगरीब ढंग का सैक्स, उत्तेजना खतरा और हत्या समान रुप से महत्वपूर्ण हैं । इसके बिना इनका जीवन संभव नहीं हैं । उनका इन आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक बनते हैं, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग । इन्सान के जिस्म का सत्य यहाँ बिकता है और खरीदा जाता हैं, और हत्याएँ सिर्फ मजे के लिए की जाती हैं ।'७ रचनाकार वैभव को यहाँ नंगा पाता हैं, बीभत्स पाता है । उसका अन्त राकी के धंस ने में खोजता हैं । पर खेद है कि राकी का वैभव अपनी समस्त फूहडता के साथ आज भी खडा हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासो में मध्यवर्गीय चेतना का विकास अपेक्षा कुछ अधिक हुआ है । इसका एक कारण यह है कि हमारे अधिकांश कथाकार मध्यवर्ग से आये हैं । और उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी को स्वयं भोगा है ।स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे समाज में औधोगिक विकास तेजीसे हुआ है । इसके साथ ही साथ श्रमिक वर्ग का जन्म हुआ , मध्यवर्ग का भी यथेष्ट विकास हुआ । यह मध्यवर्ग अनेक प्रकार के अन्तर्विरोधों से ग्रस्त हैं । एक ओर वह अपने पीछेले संस्कारों से चिपका हुआ हैं तो दूसरी ओर वह संस्कारों को तोड ने की कशमकश में हैं । एक ओर उच्चवर्ग के प्रति वितृष्णा और आक्रोश का भाव उसमे है तो दूसरी ओर स्वयं उस वर्ग में जाने के लिए जीवनभर हाथ पैर मारता है । स्वतंत्रता के बाद शिक्षा का द्रुत विकास और शिक्षित मध्यवर्गीय समाज का नौकरी , के प्रति आकर्षण , किन्तु आबादी के अनुपात में रोजगारी के लिए स्थानों का अभाव ,सरकार की पूँजीवादी औधोगिक नीति-जिस में उधोग कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में केन्द्रित होकर रह गये । मध्यवर्ग निरन्तर जोड-तोड संत्रास एवं घुटन में जीवन व्यतीत करता है । उसकी महत्वाकांक्षाएँ कम नहीं हैं । 'साथ सहा गया दुःख' का चरित्र अमित एक ऐसा ही महत्वाकांक्षी पात्र है । पेशे से लेक्चरर है ,वह अपने पेशे में भी ऊँचा उठना चाहता था ,विधा और ज्ञान के क्षेत्र में सम्मान पाना चाहता था ।-'उसे पचासों बार लगा था कि वह साधारण लोगों के समान जीवन व्यतीत कर मर जाने के लिए पैदा नहीं हुआ हैं ।उसे विशिष्ट बनना हैं -और एक सीमा तक वह विशिष्ट है भी ।' ८ विवाह के बाद उनकी और पत्नी की इच्छा है, कार

खरीदने की परंतु अमित सोचता है कि मैं क्या कभी कार खरीद पाऊगाँ ? यहाँ आर्थिक तनाव मध्यवर्ग की खुद की उपज हैं । महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अर्थ-संकोच मध्यवर्गीय परिवारों की नियति रही हैं । अमित अपनी बिमार माँ के लिए सौ की जगह एक सौ पच्चीस रुपये भेजना चाहता है । पत्नी सुमन आर्थिक अवस्था पर विचार करते हुए उसे रोकती हैं । दोनों नौंकरी करते हैं , फिर भी दोनों के बीच में आर्थिक तनाव निरन्तर बना रहता हैं । इसका कारण हमारे मध्यवर्गीय महत्वाकांक्षा और पारिवारिक आर्थिक संकोच हैं ।

'झूठा सच' में भी मध्यवर्ग रोजी-रोटी के चक्र में उलझा हुआ दिखाता हैं । शहरों में घर मध्यवर्ग की अवस्था के प्रतीक बन गये हैं । जहाँ पूरे परिवार के रहने योग्य स्थान भी उपलब्ध होना एक सपना हैं । 'झूठा सच' में इस परिवार के पास रहने के लिए एक ही कमरा हैं । तारा एक बारशीलों से कहती हैं -'हमारे यहाँ एक ही तो कोठरी हैं । भाई और मास्टरजी बरामदे में सो जाते हैं । एक रात नींद खुल गई । नालि पर जाने के लिए उठी तो मास्टरजी --- मुझे बडी शर्म आयी ।'९ घर की आर्थिक अवस्था का चित्र मास्टरजी के कपडों से भी झलकता हैं । इस परिवार की माँ और बहनें बाहर जाने से कपडों की चिन्ता अपने शरीर की त्वचा से भी अधिक करती हैं । उसके पडोश में रहनेवाले सभी लोगों की आर्थिक विपन्नता यही हैं ।क्योंकि बढती मँहगाई और आर्थिक तनाव के कारण ये लोग बेहाल हैं । कमलेश्वर द्वारा रचित 'एक सडक सत्तावन गलियों' में भी कथाकार ने समाज के मध्यवर्गीय जीवन के आर्थिक सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन का चित्रण हैं ।कथानायक सरनामसिंह और बंसी भारत के किसी भी भाग का प्रतिनिधित्व करने में समर्थ पात्र हैं । परंतु रोजी –रोटी पति –पत्नी के कलह और प्रेम , शंकाएँ आस्था और निराशा आदि सब कुछ अपने वास्तविक रुप में ही आते हैं । यहाँ पर कथाकार ने आर्थिक वैषम्य का सजीव चित्र अंकित किया है । कमलेश्वरजी का दूसरा उपन्यास 'तीसरा आदमी' में भी वर्तमान आर्थिक और सामाजिक आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति की वास्तविक स्थिति दिखाई है कि मध्यवर्ग में जन्मे हरेक सदस्य का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता । उसके घर में जूते तो सब के लिए अलग-अलग आते हैं पर चप्पलें कुछ इस तरह खरीदी जाती हैं कि उनसे एक दूसरे का काम भी निकल सके । दिल्ली जैसे महानगरों की सभ्यता के बीच यह परिवार रहता हैं । वहाँ की स्थिति का कथाकार निरुपण करते हैं –'वहाँ सीली हुई दीवारें-सडे अनाज की तरह महकता हुआ बिस्तर कोने से आती हुई राशन की गंध –मैले कपडों की भभक और उनसे फूटती हुई चित्रा के बालों में पडे तेल और बंधी हुई वेणी का बू- उनका तन पसीज ने लगता है ,और उस मिली-जुली गंध के ज्वार में वे डूब जाते ।'१० कथाकार गिरधर गोपाल के उपन्यास 'चाँदनी के खंडहर' में भी आर्थिक दुर्दशा की परिणति एक विघटित जीवन में मिलती हैं । कथानायक वसंत विलायत से डाक्टरी की परीक्षा पास करके इलाहाबाद लौटता हैं । परंतु घर की आर्थिक अवस्था के कारण मन व्यथित हो उठता हैं । छोटा भाई स्कूल जाता है लेकिन कपडें जूते फट गये , भतीजी आठ वर्ष की है किन्तु उसके उपर रसोई घरकाम लाद दिया, बडे भैया आर्थिक अभाव के कारण शरीर की हड्डियाँ निकल आयी , माँ टी. बी. से ग्रस्त हैं। भाभी के चहरे पर से मुस्कुराहट गायब है । पिता को अस्वथ्ता के कारण समय से पूर्व सेवा निवृत होना पडा । पूरा घर खंडहर हो चुका हैं ।खुद नायक अपने घर को पहचान नहीं पता –'अरे यह तो मेरा मकान है । यह फाटक है । यह बाहर का आँगन है । वह बाबू की बैठक , वह अम्मा का कमरा ,यह रहा भैया का कमरा और वह मेरा कमरा लेकिन ये ऐसे कब हो गये ? इनकी दीवारें कब गिरी ? छत कहाँ गई ।'११ यहाँ मध्यवर्ग परिवार की उच्चशिक्षा की आकांक्षा ने घर की छत तक रहने नहीं दी , उपर से मंहगाई से त्रस्त मनुष्य की चिन्ता रोटी जुटाने की , आज बीता तो कल की चिन्ता हैं । मानो जीवन जीना नहीं ,काटने की चिन्ता ही प्रमुख है । 'चाँदनी के खण्डहर' में मध्यवर्गीय समाज का विसंगतियों में जीने की विवशता ।

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में कमलेश्वरजी ने मध्यवर्गीय परिवार में आर्थिक विघटन का संत्रास कुछ इस रुप मे प्रसतुत किया है कि कथानायक वीरेन को नौकरी मिलने से परिवार में कुछ दिनों के लिए उजाला अवश्य रहता है । किन्तु उसके समुद्र में खो जाने से परिवार रुपी जहाज का कप्तान ही खो जाता है । फिर अंधेरा निराशा और इस निराशा में खोया हुआ परिवार रह जाता हैं । बाप को बेटे की मृत्यु की पृष्टि करने की सलाह इसलिए दी जाती है ताकि सरकार से मुआवजा मिल सके और परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरे । यहाँ पूरा परिवार आर्थिक विपन्नताओं के समुद्र में खो जाता हैं । उपन्यास में आर्थिक विपन्नता से जकडा श्यामलाल और उसका परिवार महानगरों की एक टूट-टूटकर बिखरी जिन्दगी हैं । जहाँ कर्ज ,बेरोजगारी और मकानों की सीलन में घुटती जिन्दगी ही है । उषा प्रियंवदाजी के उपन्यास 'पचपन खंभे लाल दीवारें' ,में महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार

की आर्थिक विषमता का बोज ढोती नारियों का निरुपण हुआ है । नायका सुषमा की विवशता उनका परिवार और परिवार का उत्तरदायित्व है । वह शिक्षित युवतियों के विवाह में भी एक कठोर बाधा बन जाती हैं । उसी प्रकार 'भ्रमभंग' एक मध्यवर्गीय युवक की अकांक्षाओं और आर्थिक विषमताओं के बीच संघर्ष का संवेदनात्मक आख्यान है । नायक चंदन का स्वप्न भी बहुत साधारण है । गाँव से शहर सपने लेकर आनेवाले किसी भी युवक को चन्दन की विवशता ग्रस सकती हैं ।परिवार और स्वयं के प्रति अनेक मोहक सपनों का प्राणी चंदन कुंठा और अनिश्चय की अवस्था में जीवन से जूझता रहा । टूटकर बिखरा वह बिखरकर जुडने की क्रिया से गुजरता हैं । परमजीत भी मध्यवर्गीय टूटपुँजिए दुकानदार का बेटा है । उसकी आकांक्षा एक सुन्दर सजाया हुआ घर हो ,छोटी मोटी कार हो ,उसकी आस्था उसके विश्वास अतीत से सदैव जुडी रहती है । सुधरी हुई आर्थिक स्थिति उसके जीवन में युगानुरुप बदलाव की प्रेरणा भी देती हैं ।उसकी पत्नी चवन्नी-चवन्नी बचाकर घर जोडने का प्रयास करती हैं । यहाँ ममता कालिया ने परमजीत एवं रमा के द्वारा मध्यवर्गीय आर्थिक स्थिति और उसकी समाजिकता का चित्रण किया हैं ।

'उखडे हुए लोग' में फिल्म तारिका बन रही सोमा अपने साथ कार में पति को साथ ले जाना चाहती हैं ।परंतु वह ऐसा नहीं कर पाती । कार सोम को लेकर निकलजाती हैं । पति अमर को ऐहसास होता है कि उसके मान सम्मान को मानों कार के खुरदरे पहियें रौंद कर चली गई । अमर धनाभाव के कारण अपमान का घूँट पीकर रह जाता हैं । सोमा फिल्मोवालों से प्राप्त पाँच हजार रुपये पर अपना अधिकार जताती है । दूसरा पात्र शरद एल.एल.बी की पढाई करने के बाद भी आर्थिक उपार्जन के अभाव में घर की हालत से चिन्ता ग्रस्त हैं -'मैं ने एल.एल.बी कर लिया हैं ।आई.ए.एस की तैयारी लायक घर की हालत नहीं'१२ आर्थिक अभाव के कारण मध्यवर्गीय व्यक्ति उच्चशिक्षा प्राप्त करने में भी सफल नहीं हो पाते वहीं स्थिति 'झूठा-सच' की नायिका तारा की हैं ।आर्थिक अभाव के कारण परिवारवाले कॉलेज की शिक्षा का विरोध करते हैं । परंतु वह ट्यूशन करके अपनी फीस की व्यवस्था करती हैं ।यहाँ भी उच्चशिक्षा के लिए आर्थिक अभाव बाधारुप हैं ।एक ओर महानगरों में कालेधन का नग्न नाच हो रहा है, तो दूसरी ओर मध्यवर्गीय लोग आर्थिक अभाव के कारण उच्चशिक्षा से वंचित हैं । मध्यवर्गीय लोग उसे अपने कर्म और भगवान के भरोसे की दुहाई भले देते है ,परंतु वास्तविकता तो यह है कि हमारे देश की व्यवस्था के कारण ही आर्थिक असमानता उपजी हैं । 'एक चूहे की मौत' में नौकरशाही से ग्रस्त बाबुओं की विवशता का चित्र प्रस्तुत किया हैं । क्रान्तिकारी 'ग' चूहे मारों का आलोचक हैं । परंतु विवश्ता ,सामाजिक कुंठा,निराशा उसे खुद को आत्महत्या करने का समाधान देती हैं और वह आत्महत्या करलेता हैं । परंतु 'प' भ्रष्टाचार से समझोता कर सुखी रहता हैं । अपमान और तिरस्कार सहकर जीवित रहने की उनकी विवश्ता हैं । हमारी राजनैतिक स्थितियाँ ही ऐसी रही हैं । जो आर्थिक असमानता के मूल को पोषित करती हैं । राजनैतिक चेतना अन्यों की अपेक्षा मध्यवर्ग में अधिक पायी जाती हैं । भगवतीचरण वर्मा का 'भूले बिसरे चित्र' में यह संकेत दिया हैं ।असहयोग आन्दोलन के विषय में गंगाप्रसाद सत्यव्रत को बताते हैं कि —यह आनदोलन शहर वालों का है 'भक्ष मंदिर' के धनंजय और भोलानाथ बत्तीस के आन्दोलन में हिस्सा लेकर जेल काट चुके थे ।'

'एक चिथडा सुख' में निर्मलवर्माजी ने बिट्टी ,इरा ,नितीभाई ,डैरी मुननू सभी मध्यवर्गीय महत्वकांक्षाओं और आत्म निर्भरता पाने के लिए वास्तविक जीवन धारा से कट जातें हैं । सभी साथ साथ होने के बावजूद भी अकेले रह जाते हैं ।जो जीवन वे जिते है वह अर्थहीन पाते हैं । मध्यवर्गीय नागरी जीवन विकृतियों और टूटन को उपन्यास में बडी बखूबी सें उतारा हैं । 'बूँद और समुद्र' का चरित्र महिपाल मध्यवर्गीय चरित्र हैं । घर की आर्थिक स्थिति उसे तोड कर रख देती हैं । भाई की पढाई के लिए अपनी पत्नी के आभूषण बेचते है वही भाई आगे चलकर उस से विमुख होता हैं । लेकिन महिपाल तो अंत तक आर्थिक अभावों से अपमान के कडुवें घूँट पीने पर विवश रहता है । मध्यवर्ग में बिखराव और विघटन के मूल में भी आर्थिक अभाव ही जिम्मेवार हैं । वह वर्ग अभिजात्यवर्ग से मिलना चाह कर भी नही मिल पाता । निम्नवर्ग के लिए उसके हदय में घृणा के अलावा कुछ नहीं हैं ।इसी द्विधा में वह फिसलता टूटता रहता है । 'चिडियाँ घर' में उपन्यासकार ने एक युग की त्रासदी का चित्रण किया हैं । यहा जीवन जीना ही युग की समस्या हैं । उपन्यास के पात्र ,दास अग्रवाल विष्ट श्रीवास्तव सभी जीना चाहता है ,परंतु यहाँ जीना ही सब से बडी समस्या हैं । एक तो घर की समस्या और नौकरी दोनों के बीच सामंजस्य सथापित करने में टूट जाते हैं । रोजगारी का अभाव नौकरी में सगावाद ,रिश्वत घोटाला हैं 'चिडियाँ घर' में बुद्विवादी नौकरी पेशा जीवन की विसंगतियों में जीने वाला

मध्यवर्ग है ।जहाँ मानव जीवन एक चिडियाँ घर में- बंध मुक्त होने के लिए छटपटा रहा है और व्यवस्था की आपाधापी उसे दम तोड ने के लिए मजबूर कर रही हैं ।

महानगरीय जीवन में निम्नवर्ग की स्थिति तों ओर भी दयनीय हैं । अशिक्षा ,बेरोजगारी ,भूख बीमारी के कारण फैलती अपराधिक भावना । रोटी-बोटी की चीख तथा भूख से भयभित नग्नता का चित्र 'मुर्दा घर' में जगदम्बा प्रसाद दिक्षीत ने निरुपित किया हैं । कचरे के ढेर की तरह इर्द-गिर्द जिन्दगीयाँ भी बिखर गई हैं । शहर की इस उपेक्षित जीवन को बिलकुल समीप से कथाकार ने देखा हैं । 'मुर्दा घर' में आवारा वैश्या जीवन की गलीचता हैं । जहाँ जीवन में घुटता अंधेरा हैं - 'मैनाबाई -खासी के बाद सडक पर फेंका गया बलगम । बीमार औरत – रंडी ।देती जाती हे गालियाँ--- मर्द को बच्चे को – सारी दुनियाँ को ।फैलता जाता है अंधेरा ।'१३ इस प्रकार उनकी दुनियाँ भी अपने साथ बदबू और अंधेरा ले जाती हैं । कही- झोंपडे तोड दिए जाते तो कहीं खडे हो जाते । एक स्थान से दूसरे स्थान पर ठहरते थे लावारिस जीवन का कोई मुकाम ही नही होता ,बम्बई जैसे महानगरों की यही स्थिति हैं ।इस भीड भाड के शहर में एक ओर वैभव की फूहडता मै विशाल भवनों की कतार खडी हैं । वही दूसरी ओर अभावों की नग्नता लिए दरबदर ठोकरे खाने के लिए विवश है यह निम्नवर्ग । शैलेश मटियानी रचित 'कबूतर खाना' में भी फूटपाथ पर जीवन बितानेवाले कबूतरों की कतार दिखती हैं । उनके लिए दरबे की व्यवस्था नहीं ।इस विशाल नगरी बम्बई की स्थिति भी वही हैं ,इन गंदी बस्तियों में नारकीयता का वर्णन करते हुए लिखते है कि –'इनके जीवन में नशा दो प्रकार का है -एक मोहब्बत का । एक दारु का ।- मोहब्बत के नशे में आदमी अपने देश के लिए , अपनी माँ बहिन का वास्ते कुरबानी करता –और दारु का नशा पीके शराबी कीचड का गटर में गिरता , तो कुतरा मुँह पर पेशाब करता ।'१४ ईश्वर की दुहाइ से उनके बच्चे तो बराबर हैं ,परंतु गरीबी से बेहाल परेशान होकर ये किसी के सामने भीख के लिए हाथ फैलाते हैं तो उसे सहायता तो ठीक परंतु सहानुभूति के बदले में उन्हें फटकार या तिसस्कार ही मिलता है ।

'एक चिथडा सुख' में कथाकार ने दिल्ली महानगर के निम्नवर्ग की वास्तविक स्थिति का रुप धरा हैं ।अभावों से त्रस्त जन सामान्य मनुष्य के रुप में अपनी पहचान भी खो देता हैं । समाज , अदालत , पुलिस और नगरपालिका के सामने इन्हें आदमी न समझने का ही विकल्प रह जाता हैं । कैसा शहर है दिल्ली मुर्दो के टीलों तले लोग जिन्दा रहता है ? नहीं यह तो जूठनों पर जिंदा रहते हैं । यही उसका सहारा भी हैं । कथा में बिट्टी और उसका कजिन तथा पाँच शाल क बच्ची ढाबे की भट्ठी के पास बैठे है , वहाँ कोयला और राख के अलावा जूठे बर्तनों के ढेर लगा था । ये लोग इन बर्तनों में से जूठन उठाने के फिराक में बैठे हैं । कथाकार उस जूठन उठाने की प्रतीक्षा में बैठे इनका चित्र प्रस्तुत करते है –'आधी चबाई हुई हड्डियाँ , गोस्त के टुकडे जिन पर इक्के –दुक्के चावल सफेद चीटियों से चिपके थे । लडकी ने अपनी फ्राक में अल्यूमिनियम का बर्तन छिपाया था ,जिस में से शोरबा नीचे बह रहा था ,इस में नंगी ,सनी ,टाँगों पर एक लम्बी सखुर लकीर खींचता हुआ , बूँद-बूँद टपकता हुआ । किन्तु उन्हें उसकी चिन्ता नहीं थी वे मुसकरात रहे थे ।'१५ उनका वैभव वही है । जूठन की प्रतीक्षा मे अगर मिल भी जाय तो वे अपने श्रम को सार्थक मानते हैं । महानगरों में निम्नवर्ग की स्थितियों का चित्रण जिस यर्थाथता से अभिव्यक्त पाता है, उतना यर्थाथता से उनकी मूल समस्या के लिए कोई उपाय के ठोस तरीकों पर शायद बहुत ही कम सोचा या विचारा जाता हैं । महानगरों के यांत्रिक अभिशाप उनको निगल जाते हैं । शेष रह जाती है विवशताएँ घूटन और चीखे ।आदमी और कुत्ते में कोई अंतर नहीं हैं । यह युग उपयोगितावादी युग हैं ,जन सामान्य के जीवन में यही तो बचा है ,बेकारी , बीमारी, भूखमरी, कर्ज तकाजे और इन सब से भी ऊपर उसकी विवशताएँ । जिन में वह टूटता रहता हैं ।

सृष्टि की समस्त वस्तुएँ उपयोगिता की कसौटी पर कसी जाने लगी । मनुष्य भी इस से वंचित नहीं रहा । हमारी स्वतंत्रता की सर्वाधिक क्रूर-विडम्बना यही हैं । परिणामतः शोषण लूट भोग-लिप्सा भ्रष्टाचार और आंतक की परिस्थितियों में निरंतर वृद्वि हुई । स्वतंत्रता के बाद महानगरों और नगरों की तेजी से वृद्वि हुई और उतनी ही तीव्रता से आर्थिक वैषम्य भी बढा । नव्य धनिकवर्ग शोषण और भोग का दर्शन लेकर नगरों के जीवन पर छा गया । उसने समाज में अनेक विकृतियों के पोषण में योग दिया , धन और भोग ने भ्रष्टाचार और यौवनाचार का जो नंगा स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया उससे काई भी वर्ग अछूता नहीं रहा । महानगरीय जीवन पर नये सिरे से चिन्तन हमारे कथाकारोंने युगीन जीवन का दुर्मिल चित्रांकन किया है । ऐसा लगता है इन उपन्यासकारों में क्रमशः श्रीजगदम्बा प्रसाद दीक्षित ,भीमसेन त्यागी ,और शैलेश मटियानी आदि रचनाकारों ने समाज जीवन को

बडी गहराई से देखा और जिया हैं । सच्चा साहित्यकार वह है जो जिस समय में जीता है उस समय के जीवन की व्यथा-कथा को अपनी कृति के माध्यम से अंकित करता है । वह समाज का सजग प्रहरी है । इस संदर्भ में हम देख सकते हैं कि आझादी के छह दशकों के बाद भी भारतीय सर्वहारा वर्ग को आज तक रोटी-कपडा-मकान सुलभ नहीं हो पाये । महानगरों की फूटपाथों पर उनके त्रस्त जीवन का सूरज उगता है ,दिन भर की कडी महेनत के बाद परिवार के आधे लोग भूखे सोते हैं । रोटी ही इनका ईश्वर है । रोटी की तलाश में ही इनके जीवन का सूर्यास्त हो जाता है । हिन्दी साहित्य के प्रमुख उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में स्वातंत्र्योत्त महानगरीय मानव समुदाय की वर्ग चेतान का वास्तविक चित्रांकन किया है ।

संदर्भ सूची :

१. अमृत और विष, अमृतलाल नागर,पृ.-२८२.

२. अमृत और विष, अमृतलाल नागर,पृ.-२५५.

३. बीमार शहर, पृ.-८७.

४. कबूतरखाना, शैलेश मटियानी,पृ.-८६-८७.

५. मनबोघबाबू- मघुकरसिंह, पृ.-२०.

६. नंगा शरीर, भीमसेन त्यागी, पृ.-११.

७. नंगा शरीर, भीमसेन त्यागी, पृ.-११४.

८. साथ सहागया दुख, नरेन्द्र कोहली, पृ.-२७.

९. जूठा-सच :,यशपाल, पृ.-१४.

१० तीसरा आदमी, कमेलश्वर, पृ.-३०.

११. चांदनी के खण्डहर, गिरिघर गोपाल, पृ.-१२१.

१२. सोमा, सत्यवान विद्यालंकार, पृ.-६२.

१३. मूर्दाघर,जगदंबाप्रसाद दीक्षित, पृ.-०७.

१४. कबूरतखाना,शैलेष मटियानी, पृ.-०१.

१५. एक चिथडासुख, निर्मल वर्मा, पृ.-१०६.